विद्या भवन ,बालिका विद्यापीठ, लखीसराय

रूपम कुमारी ,वर्ग दशम्, विषय हिंदी

दिनांक-6-10-20

NCERT syllabus

।।अध्ययन- सामग्री।।

सुप्रभात बच्चों, पिछले कई कक्षा से लगातार रस तथा उसके भेदों को पढ़ते आ रहे हैं ।

आज की कक्षा में भी रस के भेद शांत रस की चर्चा होगी ।

शांत रस- जहां संसार के प्रति वैराग्य का भाव

रस -अवयवों से परिपुष्ट होकर अभिव्यक्त

होता है, वहां शांत रस होता है ।

अर्थात , जब हृदय बाहरी चीजों से विरक्त हो

जाता है, तब अनुकूल कारण तथा

परिस्थितियों की वजह से हृदय में स्थित

स्थाई भाव वैराग्य जागृत हो उठता है ,

तदोपरांत शांत रस उत्पन्न है ।

शांत रस के अवयव –

स्थाई भाव- निर्वेद ,वैराग्य ।

आलंबन -संसार की असारता , प्रभु चिंतन ।

उद्दीपन- सत्संग, तीर्थाटन, धर्मशास्त्र

सन्यासियों की वाणी ।

अनुभाव - अश्रु बहाना, आंखें मूंदना, अलौकिक प्रसन्नता ।

संचारी भाव – धृति,हर्ष,दैन्य , ग्लानि आदि ।

उदाहरण- मेरो मन अनत कहां सुख पावै ।
जैसे उड़ी जहाज को पंछी पुनि जहाज पै आवै ।
सूरदास प्रभु काकामधेनु तजि, तेरी कौन दुहावै ।

स्पष्टीकरण - संसार के प्रति आकर्षण का खत्म होना आलंबन है । जहाज का पक्षी उद्दीपन है । कामधेनु और छेरी दुहाना भी उद्दीपन है । धृति संचारी भाव है ।

धृति का अर्थ होता है- धारण या ग्रहण ।

शांत रस के उदाहरण -

न रे तन कागद का पुतला

लागै बूँद विनसि जाय छिन में गरब करै क्यों इतना।

‘तपस्वी! क्यों इतने हो क्लांत,

वेदना का यह कैसा वेग ?

आह! तुम कितने अधिक हताश

बताओ यह कैसा उद्वेग ?

भरा था मन में नव उत्साह सीख लूँ ललित कला का ज्ञान

इधर रह गंधर्वों के देश, पिता की हूँ प्यारी संतान।

देखी मैंने आज जरा

हो जावेगी क्या ऐसी मेरी ही यशोधरा

हाय ! मिलेगा मिट्टी में वह वर्ण सुवर्ण खरा

सुख जावेगा मेरा उपवन जो है आज हरा

जब मै था तब हरि नाहिं अब हरि है मै नाहिं,

सब अँधियारा मिट गया जब दीपक देख्या माहिं

गृह कार्य - दी गई सामग्री को समझें दिए गए उदाहरणों को कॉपी में लिखें तथा किसी एक उदाहरण के अभी आपको बताएं । जैसा कि ऊपर में बताया गया है ।